



# सेन्ट्रल कान्हेरी

मुम्बई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की

ई-पत्रिका

जून - 2021



## संरक्षक

श्री सुधांशु शेखर  
क्षेत्रीय प्रबंधक

## मार्गदर्शक

श्री अजय झा  
(मुख्य प्रबंधक)  
श्री सत्येन्द्र सिंह  
(मुख्य प्रबंधक)  
श्री उमेश कुमार  
(मुख्य प्रबंधक)

## परामर्शदाता

श्री महेन्द्र पँवार  
(वरिष्ठ प्रबंधक)  
श्री रमेशचन्द्र भंडारी  
(वरिष्ठ प्रबंधक)  
श्री विकास पटेरिया  
(वरिष्ठ प्रबंधक)

## संपादक

रंजना चौधरी  
प्रबंधक - राजभाषा  
संपर्क  
राजभाषा विभाग  
मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय  
कार्यालय  
मेल :

[hindimsro@centralbank.co.in](mailto:hindimsro@centralbank.co.in)

दूरभाष : 022- 62531268

## विषय -सूची

1. क्षेत्रीय प्रबंधक जी का संदेश ..... 5
2. मुख्य प्रबंधक जी का संदेश ..... 7
3. जीवदानी मंदिर ..... 8
4. राजभाषा प्रदर्शनी ..... 12
5. सम्मान ..... 14
6. कोरोना काल में पर्यावरण व पर्यटन का भविष्य . 16
7. काव्य कुंज ..... 22
8. आतंकवाद निरोधक विवस ..... 24
9. खाना खजाना ..... 25
10. हिन्दी कार्यशाला. .... 27
11. चक्रवृद्धि ब्याज ..... 28
12. कहानियाँ ..... 30
13. कोरोना काल - पर्यटन, पर्यावरण तथा अर्थव्यवस्था 33
14. मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय - एक नजर. 38
14. वार्षिक कार्यक्रम ..... 39

\*\*\*\*\*  
पत्रिका में लिखी गई रचनाओं में व्यक्त विचार स्वयं लेखक के हैं, संपादक मंडल का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है.



# हार्दिक अभिनंदन



श्री एम.वी. राव  
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी  
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया

श्री एम. वी. राव महोदय जी ने दिनांक 01 मार्च, 2021 से हमारे बैंक में प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी के रूप में पदभार ग्रहण किया है.



सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया  
सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया  
Central Bank of India

1911 से आपके लिए "केंद्रित" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

स्वागतम्



श्री विवेक वाही  
कार्यपालक निदेशक



श्री राजीव पुरी  
कार्यपालक निदेशक

सेन्ट्रलाइट  
परिवार में आपका  
हार्दिक स्वागत है





## क्षेत्रीय प्रबंधक महोदय का संदेश

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की हिन्दी ई-पत्रिका "सेन्ट कान्हेरी" के माध्यम से आप सभी से प्रत्येक तिमाही में जुड़ते हुए मैं अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव करता हूँ.

हमारे नए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी माननीय श्री एम.वी. राव जी ने दिनांक 01.03.2021 को हमारे बैंक का कार्यभार ग्रहण किया है. मैं इस पत्रिका के माध्यम से अपने बैंक में उनका हृदय से स्वागत करता हूँ. हमारे प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय ने अपने सम्बोधन में निम्न बातों पर विशेष ध्यान देने को कहा है. मैं आशा करता हूँ कि आप सभी भी इस पर विशेष ध्यान देंगे.

1. हर शाखा को लाभ केन्द्र बनाकर उनके सीडी अनुपात में सुधार कर ब्याज एवं गैर ब्याज आय में वृद्धि करना.
2. डिजिटल बैंकिंग जैसे, एटीएम, वैकल्पिक डिलिवरी चैनल, बीसी, पीओएस. इत्यादि को बढ़ावा देना, ग्राहकों के साथ विद्यमान संबंधों के लिए " कनेक्ट सेन्ट्रल" चलाया जाए.
3. वसूली पर ध्यान क्रेन्द्रित करना ताकि लाभ अर्जित किया जा सके.
4. जिस तरह शाखा परिसर की स्वच्छता के लिए "मेरी शाखा मेरा गौरव" अभियान चलाया जा रहा है उसी तरह "मेरा एटीएम मेरा गौरव" अभियान में शाखाओं के कर्मचारियों द्वारा एटीएम का दौरा किया जाए तथा मेल आईडी पर एटीएम केबिन के साथ सेल्फी लेकर उसे साझा किया जाए.
5. सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को बैंक के उत्पादों के बारे में जानकारी एवं बैंकिंग अपडेट के साथ स्वयं को अपडेट रखना.

साथियों, पिछले कुछ वर्षों से हमारा बैंक पीसीए के अंतर्गत है और हम उसे पीसीए से बाहर निकालने के लिए निरंतर प्रयासरत हैं। सभी फील्ड में अगर उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन होगा तभी हमारा बैंक पीसीए से बाहर आ सकता है। अगर हम टीम भावना से सभी पैरामीटरों में अच्छा कार्य करेंगे तो ही हम बैंक को एक मजबूत स्थान दिला पायेंगे।

हमारा बैंकिंग व्यवसाय ग्राहक सेवा से जुड़ा है। शाखाओं में कार्यरत कर्मचारी सीधे ग्राहकों के संपर्क में आते हैं। इसलिए शाखाओं में यह जरूरी है कि प्रत्येक कर्मचारी सरकार द्वारा जारी कोविड-19 के दिशानिर्देशों का कड़ाई से पालन करें। मास्क एवं सेनीटाइजर का निरंतर उपयोग करें तथा सावधानी बरतें। यही इस भयानक संक्रमण से सुरक्षा का एकमात्र उपाय है।

आइए हम सभी मिलकर अपने बैंक के बेहतर विकास एवं प्रगति के लिए अपना अधिकतम योगदान दें।

शुभकामनाओं सहित,

सुधांशु शेखर

सेन्ट कनेक्ट  
Cent CONNECT

अपने ग्राहकों से जुड़िए.  
Connecting with our customers.

हमारे प्रतिष्ठित एवं दीर्घकालीन निष्ठावान ग्राहकों से संपर्क करना.  
To reach out to our valued and time tested clients with long standing relationship.

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया  
Central Bank of India  
१९५७ से अद्यतन "सेन्ट्रल" "CENTRAL" TO YOU SINCE 1957

www.centralbankofindia.co.in Like us on: <https://www.facebook.com/CentralBankofIndia> Follow us on: [https://twitter.com/centralbank\\_in](https://twitter.com/centralbank_in)





## मुख्य प्रबंधक महोदय का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियों,

अपने मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय की राजभाषा ई-पत्रिका "सेन्ट कान्हेरी" के माध्यम से संवाद करते हुए मुझे बेहद खुशी हो रही है.

वित्तीय वर्ष 2020-21 के लिए मैं अपनी टीम की सराहना करना चाहता हूँ , जिन्होंने शीर्ष प्रबंधतंत्र के आदेशानुसार अपनी मेहनत तथा लगन से वसूली का कार्य संपन्न करते हुए अपने लक्ष्य को काफी हद तक हासिल किया है. मौजूदा विपरीत परिस्थितियों में भी आप सभी ने जिस प्रतिभा का परिचय दिया वह अतुल्यनीय है. यह आप सभी के अथक परिश्रम का ही परिणाम है कि हम इस तिमाही के तीन पैरामीटरों के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सफल रहे हैं तथा अन्य पैरामीटरों में भी सराहनीय कार्य किया है. जिस सकारात्मक के साथ हमारी पूरी टीम मेहनत कर रही है उसकी मैं प्रशंसा करता हूँ. आगे भी हमें अपनी मेहनत जारी रखनी है तथा हमारे बैंक की प्रगति एवं विकास में अपना पूर्ण योगदान देना है.

आइए हम सभी अपने बैंक के विकास के लिए एक अतिरिक्त कदम आगे बढ़ाए.

शुभकामनाओं सहित,

अजय झा

मुख्य प्रबंधक- ऋण

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय

## जीवदानी देवी मंदिर



सुश्री वीणा सावंत, लिपिक  
विलेपार्ले शाखा, मुंउक्षेका

जीवदानी माता मंदिर की स्थापना का श्रेय महाभारत काल में पांडवों को जाता है। अपने वनवास के दौरान पांचों पांडव यहाँ आये थे और इस मंदिर की स्थापना की थी। उसी दौरान पांडवों ने वैतरणी नदी के निकट इस क्षेत्र की अधिष्ठात्री देवी एकवीरा का पूजन किया था और आस-पास के पर्वतों पर कई गुफाओं का निर्माण भी किया था।



यह जीवदानी माता का मंदिर महाराष्ट्र में ठाणे के विरार में स्थित हैं।



यह माता का मंदिर एक पहाड की छोटी पहाडी पर स्थित है. यह माता का मंदिर भक्तों के बीच अपनी चमत्कारों को लेकर माना जाता है. लोग यहाँ देश के कोने-कोने से आते हैं और अपने दुःखों को दूर करने की दुआँ मांगते हैं. माता की इतनी मान्यता है कि यह लोगों के दुःख को हर लेती है और लोग अपनी मनोकामनाएँ पूरी होने पर फिर से उनके दर्शन करने आते हैं.

जीवदानी माता का नाम जीवदानी इसलिए है क्योंकि उन्हें जीवनदानी माना जाता है. यह मंदिर बहुत पुराना है. इस मंदिर को पांडवों ने अपने वनवास के समय में बनाया था. यह मंदिर सतरवीं



सदी में बना था. माता के दर्शन के लिए 1300 सीढियों की चढाई करनी होती है. इस मंदिर में हर साल रोजाना बहुत संख्या में भक्त दर्शन के लिए आते हैं. नवरात्री के नऊ दिन और दशहरा के दिन इस मंदिर में मुख्य समारोह रहता है, जिसे देखने के लिए भक्तों की भीड़ रहती है. माता की पूजा जो भी सच्चे मन से करते हैं उसे माता अपना आशिर्वाद जरूर प्रदान करती है. यहाँ के स्थानीय लोगों का मानना है कि माता उनका तथा उनके परिवार की रक्षा करती है. अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए भक्त माता के मंदिर की चढाई नंगे पैर करते हैं. शुक्रवार

तथा रविवार के दिन इस मंदिर में भक्तों की काफी भीड़ रहती है.

कहा जाता है कि कलियुग में जगदुरु शंकराचार्य के प्रवास के दौरान उनके द्वारा प्रेरित एक गौ-पालक की भक्ति से प्रसन्न हो कर, देवी ने इसी पर्वत पर दर्शन दे कर, उसे मोक्ष प्रदान किया था. उनकी भक्ति इतनी निर्मल थी कि स्वयं कामधेनु भी उसके गौ-समुह में शामिल रहती थी.



यही कारण है कि इस पर्वत पर स्थित मंदिर के प्रांगन में कामधेनु का भी मंदिर है. ऐसी मान्यता है कि कामधेनु सभी श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण करती है. इसी वजह से लोगों ने कामधेनु मंदिर के प्रांगन में लाल कपड़ों के टुकड़ों से गांठे बांध रखी है. उस परिसर में महाकाली देवी और बरौंडा देवी क मंदिर भी है. इसके अलावा वहाँ एक पक्षी घर भी बना हुआ है, जिसमें भांति-भांति के तोते और अन्य पक्षी भी है. वहाँ के स्थानीय लोग अपने नवजात शिशुओं को लेकर उनकी प्रथम मुंडन करवाने के लिए भी आते हैं.



जीवदानी माता मंदिर के ट्रस्ट ने यात्रियों के लिए माता के दर्शन हेतु रोप-वे का निर्माण भी किया है. बुजुर्ग तथा अन्य भक्त जो चढ़ाई नहीं कर सकते, एवं छोटे-छोटे बच्चों के लिए यह काफी सुविधाजनक है. इस रोप-वे से सभी को काफी सुविधा हो गई है. इससे लोगो का समय भी बचता है.







यदि हम मुंबई से जीवदानी माता के मंदिर की दूरी की बात करें तो मुंबई से जीवदानी माता मंदिर की दूरी 60 किलोमीटर है. महाराष्ट्र सरकार के द्वारा जीवदानी मंदिर के विकास के लिए काफी मदद की जाती है. प्रशासन द्वारा जीवदानी मंदिर की रक्षा सुरक्षा के इंतजाम किए गए हैं. जीवदानी माता मंदिर पर नवरात्री पर काफी भीड़ देखी जाती है. इस मंदिर की सुंदरता पहाड़ी पर होने के कारण अधिक सुंदर लगती है. यदि हम जीवदानी माता मंदिर की सुंदरता को देखना चाहते हैं तो हमें महाराष्ट्र के विरार में स्थित जीवदानी माता के मंदिर के दर्शन के लिए अवश्य जाना चाहिए.



स्त्रोत द्वारा जारी.....



# राजभाषा प्रदर्शनी

## हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी



श्री सुधांशु शेखर, क्षेत्रीय प्रबंधक के नेतृत्व में मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया.



## हिन्दी सेन्टमेल प्रदर्शनी



श्री सुधांशु शेखर, क्षेत्रीय प्रबंधक के नेतृत्व में मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में हिन्दी सेन्टमेल प्रदर्शनी का आयोजन किया गया.

 सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया  
Central Bank of India

वैक्सीनेशन लाए तंदुरुस्ती, सेंट्रल बैंक लाए संपत्ति

पाएँ

**25 बीपीएस अतिरिक्त**  
ब्याज  
सावधि जमा पर !

0.50% अतिरिक्त  
वसिष्ठ नागरिकों के लिए

**इम्यून इंडिया डीपोजिट स्कीम**

अवधि: 1111 दिन  
शर्त: केवल कोविड-19 टिकाकृत व्यक्तियों के लिए

संश्लिष्ट अवधि ऑफर

 मास्क पहनें  शारीरिक दूरी बनाएं  हाथों को स्वच्छ रखें #Unite2FightCorona



## सम्मान

वीडियों कॉफ्रेसिंग के माध्यम से माननीय श्री एम.वी. राव, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी महोदय की उपस्थिति में मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में माननीय श्री सुधांशु शेखर, क्षेत्रीय प्रबंधक द्वारा एनपीए खातों में किए गए नकद वसूली उन्नयन तथा एसएमए खातों में किए गए वसूली के तहत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किए गए स्टाफ सदस्यों का सम्मानित किया गया.





दिनांक 22.03.2021 को मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय की ओर से “अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन” का आयोजन किया गया. इस सम्मेलन गत वर्ष के दौरान भारत सरकार की राजभाषा नीति के उत्कृष्ट अनुपालन करने वाले मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय के दो स्टाफ सदस्यों को हमारे फील्ड महाप्रबंधक द्वारा हस्ताक्षरित प्रमाण पत्र देकर पुरस्कृत किया गया



श्री सत्येन्द्र कुमार सिंह  
मुख्य प्रबंधक, मुंबई



श्री धीरज सालियन  
एसडब्लुओ, मुंबई





## कोरोना काल में पर्यावरण व पर्यटन का भविष्य



सुश्री श्रुती पाल  
सहायक प्रबंधक- परिचालन (मुंडक्षेका)

“ ये शहरों का सन्नाटा बता रहा है,  
इंसान ने कुदरत को नाराज बहुत किया है.”

“ हमें पहले कई बार चेतावनी मिली थी कि अगर हम इस पृथ्वी और प्रकृति की देखभाल करने में असफल रहे तो इसका मतलब यही होगा कि हम अपनी देखभाल नहीं कर पाए.”

- संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण प्रमुख  
इंगर एंडरसन

कोरोना के कहर से शायद इसलिए पूरी दुनिया परेशान है. इस महामारी से संक्रमित और मरने वालों के आंकड़े लगातार बढ़ते जा रहे हैं. कोरोना से अब तक पूरे विश्व में लाखों लोग प्रभावित हो चुके हैं. कोरोना ने पूरे विश्व के अर्थव्यवस्था को हिला दिया है. भारत, फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, इरान आदि जैसे देश भी इसके लपेटे में आ चुके हैं. पूरे विश्व में इस विनाशकारी महामारी ने तबाही मचा रखी है.

कोरोना वायरस महामारी से पर्यटन उद्योग बुरी तरह प्रभावित हुआ है. देशभर में लॉकडाउन से पर्यटन उद्योग की कमर टूट गई है. इससे उद्योग से जुड़े 3.8 करोड़ लोगों के सामने रोजगार का संकट खड़ा हो गया है. भारत में करोड़ों लोग प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यटन उद्योग से जुड़े हुए हैं.

ना सिर्फ भारत बल्कि पूरी दुनिया के कई शहरों के लॉकडाउन से सबसे ज्यादा नुकसान पर्यटन उद्योग को हो रहा है. विश्व ट्रेवल एंड टुरिज्म काउंसिल (WTTC) के अनुसार पर्यटन उद्योग में पांच करोड़ लोगों का रोजगार खत्म हो सकता है. 2020 में पर्यटन से जुड़ी 25 फीसदी बुकिंग्स रद्द की चुकी है. ऐसे में पर्यटन व्यवसाय को खासा नुकसान हो रहा है.



डब्ल्यूटीटीसी के अध्ययन के अनुसार पर्यटन उद्योग को जो नुकसान होगा, उससे उबरने में करीब 10 से 12 महीन लग जाएंगे. क्योंकि लोगों के मन में डर बैठ गया है और वे विदेश जाने से बचेंगे.

रेलें नहीं, मेले नहीं,  
रिक्शे नहीं ठेले नहीं.  
जीवन की रेलपमेल में,  
ऐसे तो पल झेले नहीं.  
जीवन की गति अवरूद्ध है,  
गतिरूद्ध है सारा शहर.  
फैला कोरोना का कहर,  
डर है बहुत आठों पहर.

विशेषज्ञों का कहना है कि आगे लॉकडाउन में ढील मिलने के बाद भी पर्यटन का तौर तरीका आने वाले महीनों और सालों तक वैसा नहीं रह जाएगा जैसा पहले हुआ करता था. अब समूह की बजाए लोग अकेले या फिर जोड़ियों में घूमेंगे.

कल्पना कीजिए कि आनेवाले वक्त में लोग ताजमहल के सामने मास्क पहनकर अपनी तस्वीर खिंचवा रहे हैं. जैसे विदेशों में हवाई अड्डों पर सवारियों की स्क्रीनिंग के लिए कम्प्यूटर लगे हुए हैं वैसे ही भारत में भी लगाने की योजना पर काम किया जा रहा है, ताकि हवाई अड्डे के अधिकारियों को यात्रियों के नजदीक जाने से बचाया जा सके. कुछ विमानों में सवारी अब एयर होस्टेस के मुस्कुराते हुए चेहरे नहीं देख पाएंगे क्योंकि कुछ विमान कंपनियाँ अपने क्रू मेम्बर के लिए पी.पी.ई. अनिवार्य करने पर विचार कर रही हैं.





राजमार्गों पर भी जिंदगी पहले जैसी नहीं रहने वाली है. आने वाले दिनों में लोग ढाबे के बाहर खाट लगाकर मस्ती से वक्त गुजारने के बारे में नहीं सोच पाएंगे. हो सकता है कि किसी ने एक कप चाय का ऑर्डर दिया और किसी वेंटर के पहुँचाने के बजाए एक लंबे लकड़ी के सहारे आपको चाय सर्व किया जाए.

मेट्रो के प्रवेश में भी उसी तरह के प्रोटोकॉल का पालन करना होगा , जैसे एयरपोर्ट पर करना होता है. अंदर जाते वक्त फिजिकल डिस्टेंसिंग का पालन करना अनिवार्य होगा. थर्मल स्क्रीनिंग और एक्स-रे बैगेज स्क्रीनिंग जारी रहेगी.

आम तौर पर पैसे बचाने के लिए टिकट खरीदते वक्त लोग यात्रा बिमा के विकल्प का चयन नहीं करते हैं. लेकिन अब परिस्थितियाँ बदल गई हैं. अब यह किसी भी यात्रा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा होने जा रही है. फिर चाहे कोई काम के सिलसिले में कहीं जा रहे हों या फिर छुट्टियाँ मनाने. कोरोना के बाद की दुनिया बहुत बदली हुई होगी. इसी बदलाव पर कुछ बोल याद आते हैं:-

“हैं कुछ दरवाजे बंद  
तो कुछ खुले भी हैं.  
है कुछ खाहिशें मन में दबी,  
तो कुछ जगी भी है,  
वक्त बदल रहा है.  
तो उसके साथ खुद को डाल रहे है हम,  
दौर बदल रहा है,  
तो जिंदगी जीने का दौर अब कुछ बदल रहे हैं हम.

इन दिनों कोरोना की तमाम त्रासदियों से जूझते हमारे शहरों के लोग सुबह शाम की हवा में एक नई ताजगी महसूस करने लगे हैं.

“चिड़िया चहचहकाती हुई एक दूसरे से पूछती, कहाँ गुम हो गया है इंसान ?

बाजार से इठलाकर चलते हुए हाथी ने बताया, कोरोना काल में घर में कैद हो गया नादान.



देश के अनेक भागों में शहरों और कस्बों की सड़कों पर वन्य जीव-जंतू विचरण करते दिखाई देने लगे हैं. कुछ ऐसे अचम्भित भाव से कि जैसे यह जानने की कोशिश कर रहे हों कि अभी मध्य मार्च तक जो इंसानी कौम हमेशा की तरह हर ओर हाहाकार मचाती दिखाई दे रही थी वह अचानक इस तरह से भयभीत और बेजान की क्यों हो गई है.

सड़क पर गाड़ियों की कतारें धुआँ उगलती फैक्ट्रियाँ और धूल बिखेरते निर्माण हमारे शहरों के विकास की पहचान बन गए थे. बड़े पैमाने पर होने वाली गतिविधियों ने हमारे शहरों की हवा को कितना जहरीला और नदियों को कितना प्रदूषित किया, यह हम सब जानते हैं.

अब लॉकडाउन में इसमें जो सुधार हुए हैं, वह भी देखिए. हवा का जहर क्षीण हो गया है और नदियों का जल निर्मल. शहरों के इर्द-गिर्द बहने वाली नालियों जैसी बन गई नदियाँ आजकल अपने साफ पानी के कारण इतराने लगी हैं. गंगा-यमुना जैसी महानदियाँ, जो बीसियों साल और अरबों रुपये स्वाहा करने के बाद भी स्वच्छ नहीं हो पायी थीं, अचानक उनकी भी रंगत बदलने लगी हैं.



इतना ही नहीं चंडीगढ़ से हिमाचल की हिमालय की चोटियाँ दिखने लगीं. समुद्रों की लहरों में ताजगी बढ़ गई है और वहाँ का जीवन भी नई सासें लेने लगा है. देश के शहरों में गहराते वायु प्रदूषण की पहचान करानेवाला एयर क्वालिटी इंडेक्स भी अविश्वसनीय रूप से दो अंकों तक सिमट चुका है. साथ ही, दुनिया भर में ध्वनि प्रदूषण भी अभूतपूर्व ढंग से कम हो गया है. कार्बन उत्सर्जन की दर में भी भारी कमी आ गई है.



“यह महानगर की सुबह

तनिक अलसाई सी, खाली सड़कों पर

डोल रगी तनहाई सी

फिर पेड़ों सी शाखों पर कोयल कुहुक उठी

कुदरत भी जैसे इठलाकर खुद चहक उठी”

हांलाकि वैश्विक लॉकडाउन के कारण पर्यावरण में दिखाई दे रहे सकारात्मक प्रभाव स्थाई होंगे इसमें कड़ियों को संदेह है. इस बात की पूरी आशंका है कि कोरोना मुक्त होते ही दुनिया फिर से उसी पुरानी भागमभाग में जुट जाएगी और इंसान फिर से पर्यावरण के शत्रु की भूमिका में दिखने लगेगा. यह भी आशंका है कि यह शत्रुता पहले से भी ज्यादा हो सकती है. दुनिया की सबसे प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में से एक “द इकॉनॉमिस्ट” के मुताबिक कोरोना संकट की वजह से आया आर्थिक संकट आने वाले समय में पर्यावरण की हालत पहले से भी खराब कर सकता है. पत्रिका के मुताबिक 2008 के आर्थिक संकट के बाद कई क्षेत्रों को मिले प्रोत्साहन पैकेज और फ्रासिल फ्यूल की कम कीमतों की वजह से आर्थिक गतिविधियाँ पहले से बढ़ गई थी और इसकी वजह से दुनिया भर में कार्बन उत्सर्जन की मात्रा पहले से और ज्यादा हो गई.

हांलाकि कोरोना संकट अनुष्यता के लिए जिस तरह की चुनौती बन रहा है, उससे कई लोगों को यह उम्मीद भी बंधती है कि मानव जति इससे कुछ तो सबक सीखेगी ही. सुधरने का जो अवसर कोरोना के बहाने पृथ्वी को मिला है, मानव जाति उसका लाभ अवश्य उठाएगा. आशा की जा सकती है कि कोरोना कहर के बाद मनुष्य की लालसाएँ थोड़ी कम होंगी, उसका लालच कम होगा और शायद हमारी प्रकृति फिर से अपना स्वाभाविक स्वरूप वापस पा सकेगी.

महात्मा गांधी कहते थे कि यह पृथ्वी सारे इंसानों की जरूरतें पूरी करने के लिए समर्थ है, लेकिन वह एक भी मनुष्य के लालच को पूरा नहीं कर सकती. शायद यह कोरोना काल में लालच और वास्तविक जरूरतों के बीच का अंतर समझा रहा है. कोरोना की तमाम त्रासदियों और संकटों के बीच यही एक बड़ी उम्मीद भी है. किसी ने सही कहा है -



“बाहर का पर्यावरण तो खुद बदल जाएगा  
तुम अपने अंदर का वातावरण बदल कर तो देखो,  
बाहर की हवाओं का रुख भी बदल जाएगा,  
अंदर के हालात बदल कर तो देखो.  
बाहर का प्रदुषण भी मिट जाएगा,  
अपने अंदर का मैल मिटा कर तो देखो.”

एक ओर पर्यटन उद्योग है जो काफी त्रासदियों का मुकाबला कर रहा है तो दूसरी ओर पर्यावरण है जो अपने आप को फिर से निहारने में जुटा हुआ है. परंतु यह तो सच है कि ना कि पर्यटन व्यवसाय यह अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण पर निर्भर है. कहते हैं कि पर्यावरण किसी को भी अपने ऊपर हावि नहीं होने देती और इस कोरोना काल ने यह मनुष्य को सही मायनों में समझाया है. अंततः पर्यावरण है तो जान है और जान है भी जहान है.

(इस निबंध को अखिल भारतीय हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में आंचलिक स्तर पर प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है)

## पाठकों से अनुरोध

आपसे अनुरोध है कि ई-पत्रिका में आगामी अंक हेतु लेख, कहानियाँ, कविताएँ, चुटकुले या रसोई के व्यंजन, दर्शनीय स्थल आदि की जानकारी हमें [hindimsro@centralbank.co.in](mailto:hindimsro@centralbank.co.in) पर प्रेषित करें. उक्त सामग्री हमें हिन्दी-अंग्रेजी-क्षेत्रीय भाषा में भेजी जा सकती है.



## काव्य -कुंज



श्री प्रदीप कुमार  
शाखा प्रबंधक - देवनार शाखा

### खोये हुए शब्द .....

फिर लिख रहा हूँ गीत कोई  
पर "वो" शब्द मिलते नहीं  
भावनाएँ जो हैं जेहन में  
अब वो निकलते नहीं ...

खो गए वो शब्द सारे  
जिनसे बनती थी गजल  
वो धुन भे अब ना रहे  
वो राग भी निकलते नहीं ...

कभी उन शब्दों से मिलकर  
बनती थी जो पंक्तियाँ  
वो शीर्षक भी अब ना रहे  
वो रचनाएँ भी बनती नहीं...

निखरते थे जो शब्द मेरे  
कभी छंदों का रूप लेकर  
वो छंद भी अब ना रहे  
वो लय भी बनती नहीं .....

पर यहीं पे अंत नहीं है  
शब्द फिर से आयेंगे  
फिर से वो आपस में मिलकर  
पंक्तियाँ बनाएंगे .....

भावनाएँ फिर जी उठेगी  
जो जेहन में है दबी  
निकलेंगे फिर छंद सारे  
जो निकल न पाए कभी ....

फिर बनेगी लय और  
राग भी फिर निकलेंगे  
और शीर्षकों में बंध कर  
मेरी रचनाएँ फिर से निखरेंगे.....







श्री विकास पटेरिया  
वरिष्ठ प्रबंधक, मुंडक्षेका

### हमम सही है !!!

परिस्थिति नई है, अतीत में कुछ ऐसे ही घटित हो चुकी है.  
एक नया समय है. विचार, भातियाँ ,  
दुष्प्रचार जरूर है,  
पर साथ ही उपाय यही है...

ये सार कुछ अगर अलग सा प्रतीत होता है,  
तो क्यू यह लगता सही है?  
सही है या नहीं है ....  
दाव पर बहुत कुछ यहीं है, न लगाया मास्क  
तो ...  
परिणाम बिलकुल भी सही नहीं है.

क्या गलत और क्या सही है ...  
बुद्धि, विवेक, शिक्षा, संस्कार, नैतिकता की,  
क्या यह परीक्षा नहीं है ???  
समय के साथ सत्य जो बदलने लगे तो,  
क्या वह असत्य नहीं है???  
बिलकुल सही है, बिलकुल ही सही है,

आपदा काल में सभी का बार-बार  
आवश्यकानुसार हाथ धोना,  
क्या करने योग्य नहीं है?  
प्रश्न यह मेरे थोडे अलग , हमेशा से  
ऐसे ही हैं.

उद्देश्य सामाजिक दूरी बनाएँ रखने का,  
किसे विदित नहीं है ???  
जो दिखता नहीं उससे क्या डरना ??  
क्या दिखने पर डरना सही हैं??  
डरना नहीं है.

जो है वो है , उसे न मानने से हानि  
किसकी नहीं है??

बात सीधी सरल इतनी ही है...  
बचाव इलाज की तुलना में बहुत ज्यादा  
सही है.

बोलकर भी नहीं बोला, आप समझ गए  
आशा पूरी यही है....



## आतंकवाद निरोधक दिवस

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय में आतंकवाद निरोधक दिवस पर शपथ ग्रहण दिलाते हुए  
श्री सुधांशु शेखर, क्षेत्रीय प्रबंधक एवं सभी स्टाफ सदस्य





## खाना-खजाना



सुश्री रीटा कपाडिया  
लिपिक

कुरार विलेज शाखा, मुंडक्षेका

### कठियावाडी ढोकली सब्जी

**सामग्री :** 1 कप बेसन, 2 कप पानी, ½ चम्मच लाल मिरची पावडर, ¼ चम्मच हलदी पावडर, नमक

**विधि :** बेसन, पानी, मिरची पावडर, हलदी पावडर, नमक डालकर पेस्ट बना लें उसमें गांठ नहीं रहनी चाहिए. फिर इस पेस्ट को नॉन स्टीक पैन में डालकर मध्यम आंच पर रखकर लगातार चलाते रहे. जब पेस्ट किनारा छोड़ने लगे तो गैस से उतार लें. ग्रीस किए हुए थाली में डालकर फैला दें. जब थंडा हो जाए तो छोटे छोटे तुकडो में काट लें. आपको पनीर जैसे नरम तुकडे लगेंगे. आपकी ढोकली तैयार है.

**करी बनाने के लिए :** 3 चम्मच तेल लें उसमें राई, जीरा, अदरक लहसूण का पेस्ट, लाल मिरची डालकर मिक्स करें. उसमें 1 कप पानी डाले 2 मीनट उबाल आने दे. उसमें ¼ चम्मच हलदी पावडर, ½ चम्मच धनिया पावडर, 1 चम्मच लाल कश्मीरी मिरची पावडर डालकर लगातार चलाते रहें. उसके बाद ग्रेवी को गाढा करने के लिए 1 चम्मच बेसन लेकर उसे थोडे पानी में मिक्स करें और उसे ग्रेवी में डाले. ½ कप छांस डालकर चलाते रहे. उबाल आने पर ढोकली डाल दें. धनिया पत्ते से सजाएँ.





## बाजरी मेथी वडा

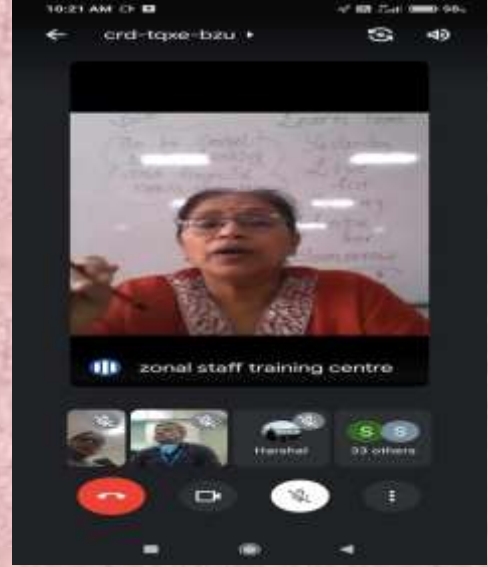
**सामग्री :** 6 चम्मच दही, 4 चम्मच गुड, 1 कप मेथी के पत्ते, 4-5 मिरची, एक छोटा आले का तुकड़ा , 5-6 कलियाँ लहसूण, 1 चम्मच अजवाइन, ½ चम्मच हलदी, ½ चम्मच जीरा, 1 चम्मच तिल, 2 चम्मच तेल , 2 कप बाजरी का आटा, ¼ कप गेहूँ का आटा.

**विधि :** आला, लहसूण तथा मिरची को पीस कर पेस्ट बना लें. गुड और दही मिलाकर पेस्ट बना लें. एक पैन लेकर उसमें 2 चम्मच तेल डालें, अच्छा कलर आने के लिए हलदी डालें, फिर अजवाइन, तिल तथा हिंग डालकर मेथी के पत्ते डालकर 5 मिनट तक पकाएँ फिर नमक डालें और गैस बंद कर दें. गुड और दही का पेस्ट डालें, आला लहसूण और मिरची का बनाया हुआ पेस्ट डालकर मिक्स करें. उसके बाद बाजरी का तथा गेहूँ का आटा डालें और थोड़े से पानी के साथ उसको मिला लें. गिला कपडा या प्लास्टिक का पेपर ले और आटे के छोटे रोल बनाकर हाथ से पूरी के तरह गोल आकार दें फिर तेल में उसे सुनहरा होने तक डीप फ्राय करें. बाजरी मेथी वडा तैयार है. सॉस के साथ या हरी चटनी के साथ परोसे .

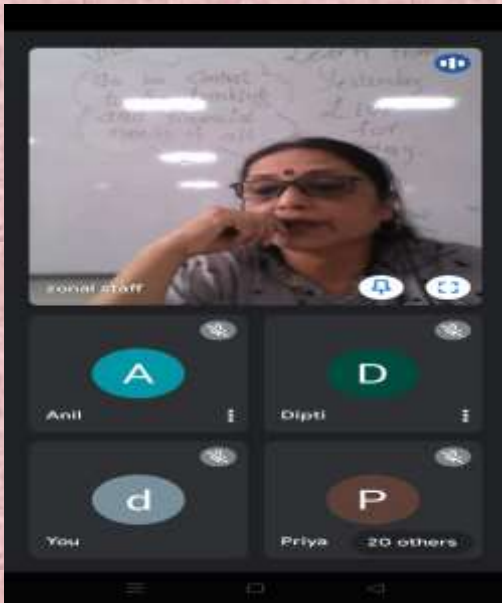




## हिन्दी कार्यशाला



मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय के तत्वावधान में दिनांक 19.06.2021 को दमुक्षेका, मुंउक्षेका तथा ठणे क्षेका सहित एक संयुक्त हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया. जिसमें 43 कर्मचारियों को हिन्दी प्रशिक्षण दिया गया.







श्री नीरज तिवारी  
सहायक प्रबंधक - मुउक्षेका

## चक्रवृद्धि ब्याज

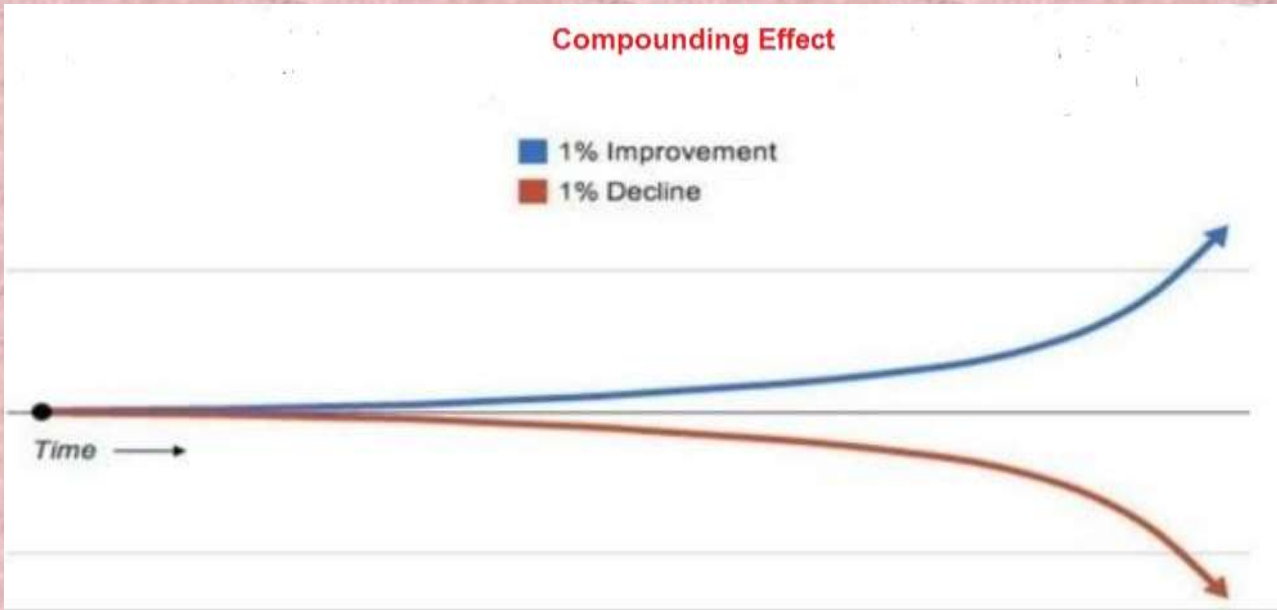
ग्राहक के साथ संवाद करते समय एक प्रश्न ने मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया. प्रश्न बहुत सामान्य था कि पीपीएफ खाते का क्या फायदा है? मेरा जबाब था कि ज्यादा ब्याज, कर में फायदा, सरकारी योजना इत्यादि. परंतु थोड़ा गहराई में सोचने पर लगा कि नही यह असली फायदा नही है. असली फायदा तो लम्बे समय तक अनुशासन के साथ बचत करना एवं उसे चक्रवृद्धि ब्याज के साथ बढ़ने देना है. जिससे हमें बचत करने की आदत हो जाती है और हम भविष्य के प्रति तैयार रहते हैं.

बैंकर होने के नाते हम चक्रवृद्धि ब्याज को अच्छी तरह समझते हैं. अगर चक्रवृद्धि ब्याज इतना अच्छा है तो हम इसका पूरा फायदा क्यों नहीं उठाते हैं, अर्थात इसे जीवन के दूसरे क्षेत्रों में लागू क्यों नहीं करते हैं? जैसे अगर हम रोज कुछ नया सीखने का संकल्प लें तो कुछ ही वर्षों में हम निपुण हो जायेंगे व इससे हमारी उत्पादकता बढ़ जायेगी. इसका फायदा हमारे बैंक व परिवार दोनों को मिलेगा. इसी प्रकार अगर हम अपने व्यवहार में निरंतर सुधार लायें तो इसका दूरगामी परिणाम ग्राहक संतुष्टी व बेहतर आपसी संबंधों के रूप में मिलेगा. अगर हम रोजाना अपनी दिनचर्या व खाने-पीने की आदत को बेहतर करें तो इसका फायदा अच्छे स्वास्थ्य के रूप में मिलेगा.

इसी प्रकार हम जिंदगी के सभी हिस्सों में इसका उपयोग कर सकते हैं और इससे होने वाले फायदों कि कल्पना भी नहीं कर सकते हैं. हमें जरूरत है एक अच्छी आदत की व उसका लम्बे समय तक अनुशासन के साथ पालन करने की. क्योंकि जो आदत 1 शब्द प्रतिदिन सिखने से शुरु होगी कब 10 शब्द व 100 शब्द प्रतिदिन पहुँच जायेगी हमें पता भी नही चलेगा. उदाहरण के लिए अगर हम रोजाना अपनी कार्य कुशलता में 1% का सुधार करें तो एक वर्ष में हमारी कार्य कुशलता 365% नहीं बढ़ेगी अपितु 3740% बढ़ जायेगी. किसी भी क्षेत्र में दक्षता हासिल करने का बस यही तक तरीका है और इसके कारण कई लोगों ने असाधारण सफलता प्राप्त की है.



एक क्षेत्र में बेहतर होने का फायदा अन्य क्षेत्रों को भी मिलता है. उदाहरण के तौर पर ज्ञान बढ़ने पर व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है. निर्णय लेने की क्षमता बढ़ती है, आर्थिक तरक्की होती है, पारिवारिक तथा कार्य क्षेत्र में संबंध सुधरते हैं. इसे हम निरंतर उन्नति का चक्र अर्थात Cycle of continuous improvement भी कह सकते हैं. आज हम जो भी है अपनी भूतकाल के आदतों का परिणाम है. हमारा ज्ञान, अनुभव सीखने की आदत का व हमारा स्वास्थ्य दिनचर्या का चक्रवृद्धि प्रभाव है. अगर हम भविष्य में कुछ बड़ा करना चाहते हैं, तो हमें नियमित रूप से उस दिशा में कार्य करना होगा ताकि हमें भी Power of compounding का फायदा मिल सके.



इसी प्रकार यह बुरी आदतों में भी कार्य करता है, जिसे हम दुष्चक्र (Vicious cycle) कहते हैं तथा इसके परिणाम बहुत घातक होते हैं, जिससे हमें बचना चाहिए. दुष्चक्र (Vicious cycle) न केवल व्यक्तिगत व सामाजिक नुकसान पहुँचाता है, अपितु हमें मानसिक रूप से कमजोर करता है. व्यक्ति कभी नहीं समझ पाता कि उसके साथ होने वाले नकारात्मक घटनाओं का कारण क्या है? और इससे कैसे बाहर निकला जा सकता है? मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि जिंदगी में अगर आप अच्छी आदतें नहीं अपना रहे हैं तो आपकी बुरी आदतों की तरफ जाने की संभावना ज्यादा है. अर्थात आप इस दुष्चक्र (Vicious cycle) में पड सकते हैं.

अपने आप को सुधारने का कार्य हम कहीं से भी प्रारंभ कर सकते हैं, जैसे अच्छी किताबें पढना, व्यायाम करना, समय पर खाना एवं समय पर सोना, शिक्षा का स्तर सुधारना इत्यादि. बस जरूरत है एक सकारात्मक सोच एवं लम्बे नजरिये कि, बाकि कार्य चक्रवृद्धि प्रभाव करेगा. शायद इसी कारण Power of compounding दुनिया का आठवाँ अजूबा भी कहा गया है.



# कहानियाँ

## एकाग्रता का महत्व

वीर बहादुर एक सर्कस में काम करता था. वह खतरनाक शेर को भी कुछ समय में पालतु बना लेता था. एक दिन सर्कस में एक नौजवान आया. वह जानवरों के हाव-भाव और हरकतों पर रिसर्च कर रहा था. उसने वीर बहादुर से कहा, “आपका बहुत नाम सुना है. खतरनाक शेर को भी पालतू कैसे बना लेते हैं आप? वीर बहादुर ने मुस्कराते हुए कहा, “देखो, यह कोई राज नहीं है. तुम बड़े मौके पर आए हो. आज ही मुझे एक खतरनाक शेर को पालतु बनाना है. वह कई लोगों को अपना शिकार बना चुका है. तुम मेरे साथ चलना और वहाँ खुद देखना कि मैं कैसे यह काम करता हूँ.”

नौजवान ने देखा कि वीर बहादुर ने अपने साथ न कोई हथियार लिया है और न ही बचाव के लिए कोई दूसरी चीज. उसने अपने साथ बस एक लकड़ी का स्टूल लिया है. वह हैरान था कि स्टूल से वीर बहादुर खतरनाक शेर को कैसे काबू कर लेगा. शेर जैसे ही वीर बहादुर की तरफ गरज कर लपकता, वह स्टूल के पायों को शेर की तरफ कर देता. शेर स्टूल के चारों पायों पर अपना ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश करता और असहाय हो जाता. ध्यान बंटने के कारण कुछ ही देर बाद शेर वीर बहादुर का पालतू बन गया. इसके बाद वीर बहादुर ने नौजवान से कहा, “ अक्सर ऐसा होता है कि एकाग्र व्यक्ति साधारण होने पर भी सफल हो जाता है, लेकिन असाधारण व्यक्ति भी ध्यान बंटने के कारण शेर की तरह पराजित हो जाता है.

नौजवान ने तभी तय कर लिया कि वह जीवन में हर काम एकाग्र होकर करेगा.





## कौआ और तीतर

किसी जंगल में एक बहुत सयाना कौआ रहता थी. जंगल में सभी उसकी बहुत इज्जत करते थे.



उसकी उम्र काफी हो गई थी इसलिए उसके पास जंगल की कहानियों का पूरा खजाना था. अक्सर जंगल के पक्षी अपने बच्चों को उसके पास छोड़ जाते ताकि वह उनकी देखभाल कर सके. पक्षियों के बच्चों को अपने कौए चाचा से कहानियाँ सुनने में बहुत आनंद आता था. एक बार कौए ने उन्हें एक तीतर की कहानी सुनाए. यह कहानी बहुत पुरानी थी.

वे एक जंगल में रहते थे. कौआ पेड़ पर बने घोंसले में रहता था और तीतर उसी पेड़ की जड़ों में बने खोखल में. वे दोनो पक्के दोस्त बन गए. वे एक-दूसरे को कहानियाँ सुनाते और सारे दिन की घटनाओं के बारे में चर्चा करके अपना समय बिताते. उन दोनों को एक-दूसरे के साथ समय बिताना बहुत अच्छा लगता था.

एक दिन तीतर धान की तलाश में कुछ नए खेतों की ओर निकल गया. कौआ उसका इंतजार करता रहा, पर वह वापस नहीं आया. रात हो गई थी. कौए को चिंता होने लगी कि कहीं तीतर किसी जाल में न फंस गया हो या उसे कोई दूसरा जानवर न खा गया हो. उसे पूरा यकीन था कि अगर उसका दोस्त सही-सलामत हुआ तो वह अवश्य वापस आएगा. इसी तरह कई दिन बीत गए पर तीतर का कुछ पता नहीं चला. कुछ ही दिन बाद एक खरगोश वहाँ आया. उसने पेड़ की जड़ में एक खोखल देखा तो उसे ही अपना घर बना लिया. वह मजे से उस घर में रहने लगा. कौए ने भी उसे कुछ नहीं कहा, क्योंकि बहुत समय से उसे तीतर की कोई खोज-खबर नहीं मिली थी. उधर तीतर धान के खेतों में आराम से रह रहा था. वहाँ खा-खा कर खूब मोटा ताजा हो गया. फिर एक दिन उसे अपने पुराने घर और दोस्त की याद आई. जब वह वापस अपने घर आया तो उसने देखा कि उसके घर पर तो एक खरगोश ने कब्जा कर लिया है. उसे यह बात बहुत बुरी लगी. इस पर उसे बहुत गुस्सा भी आया. "कौन हो तुम ? यहाँ क्या कर रहे हो? यह मेरा घर है. तुम्हें यहाँ से चले जाना चाहिए." तीतर ने खरगोश को फटकारा.



“यह क्या बकवास है. अब यह मेरा घर है. मैं यहाँ बहुत समय से रह रहा हूँ. तुम तो इसे छोड़कर चले गये थे. मैं अपने घर से नहीं जाऊँगा. खरगोश ने जवाब दिया और कहा छोड़ी गई चीज जिसे मिलती है, वह उसकी ही होती है. अब यह मेरा घर है क्योंकि अब मैं यहाँ रहता हूँ तुम अपने लिए नया घर खोज लो.



“ओह! तो तू मुझे समझा रहा है. बड़ा आया ज्ञानी कहीं का ! तीतर गुस्से में बोला. उस खरगोश ने उसकी एक नहीं सुनी तो वह बोला, “हम किसी से पूछ लेते हैं कि सही कौन है, मैं या तुम ?”

वे अपने आसपास किसी ऐसे समझदार व्यक्ति को खोजने लगे जो सही फैसला कर सके. तभी उन्हें नदी के किनारे पूजा करता हुआ एक बिल्ला दिखाई दिया. असल में वह बिल्ला बहुत मक्कार था. वह जैसा दिखाई दे रहा था, वैसा था नहीं. उस मक्कार ने एक साधु का चोला पहना हुआ था.

जब तीतर और खरगोश उसके पास जाने से डरने लगे तब बिल्ला ने कहा कि उसने अपनी सारे बुरी आदतें छोड़ दी हैं, अब वह बहुत धार्मिक हो गया है. इसलिए मुझसे मत डरो. परंतु खरगोश और तीतर ने दूर से ही उसे अपने झगडे के बारे में बताया, तब बिल्ला बोला, मैं बहुत बुढ़ा हो गया हूँ इसलिए अच्छी तरह सुनाई नहीं देता. क्या तुम मेरे पास आ कर नहीं बता सकते कि क्या बात है. मेरा यकीन करो, तुम पूरी तरह से सुरक्षित हो.”

खरगोश और तीतर उसकी बातों पर विश्वास कर के उसके पास चले और अपनी कहानी सुनाने लगे. दृष्ट बिल्ले ने मौका पाते ही एक झपट्टा मारा और दोनों को ही मार कर खा गया.







श्री संजीव कुमार सिंह  
प्रबंधक - तिलसे शाखा

## करोना काल - पर्यावरण एवं पर्यटन तथा अर्थव्यवस्था

इस काल में पर्यावरण एवं पर्यटन का भविष्य प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से बहुत प्रभावित हुआ है और भविष्य में होगा. जहाँ तक इसमें प्रभाव की बात है तो इसका प्रभाव पर्यावरण पर अधिक सकारात्मक है जबकि पर्यटन पर नकारात्मक है. सबसे पहले हम चर्चा करते हैं - पर्यावरण की

### पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव :-

1. हवा की गुणवत्ता में सुधार
2. स्वच्छ समुद्र तट
3. ध्वनी प्रदूषण में कमी
4. नदियों के प्रदूषण में कमी
5. नाइट्रोजन डाए ऑक्साइड में कमी
6. कार्बन डाय ऑक्साइड में कमी
7. ओजोन परत में सुधार





हम एक-एक करके इसके बारे जानकारी बता रहे हैं कि हवा के गुणवत्ता में सुधार का मुख्य कारण यह है कि कोरोना काल में गाड़ियों का आना-जाना बंद हो गया, जिसके कारण लोगों की बाहर जाने की क्षमता कमी हुई जिसके फलस्वरूप गाड़ियों से धुँआ का उत्सर्जन नहीं हुआ. जिसके फलस्वरूप हवा में शुद्धता बढ़ गई और इसका PM2 लेवल बहुत कम हो गया. सभी को याद होगा कि हमारे देश की राजधानी दिल्ली में PM2 दिसम्बर 2019 में केवल 20 तक पहुँच गया था. लोगों को सांस लेने में तकलीफ होने लगी थी.



समुद्री तट स्वच्छ होने का मुख्य कारण है कि - कोरोना काल में पर्यटन पर रोक लगा दी थी. समुद्री तट पर जाने से भी रोक लगी हुई थी. जिसके कारण समुद्री तट पर कचरा नहीं फैला. अगर समुद्री तट पर घुमने या पिकनीक करने रोक न लगी होती तो समुद्री तट पर का केवल दिसम्बर दिसम्बर 2019 से मार्च 20 तक PM2 तक पहुँच गया था, जिससे लोगों को सांस लेने में तकलीफ होने लगी थी. लेकिन अभी सब अच्छा है. मनुष्य द्वारा फेंका हुआ कचरा जमा होता था. लेकिन रोक की वजह से समुद्री तट अभी काफी साफ है.



पर्यावरण में ध्वनी प्रदुषण के स्तर में कमी का मुख्य कारण है मानव गतिविधियों पर रोक जिसके कारण औद्योगिक या वाणिज्यिक गतिविधियों पर रोक. वाहनों के परागमन पर रोक. जिसके कारण ध्वनी प्रदुषण का प्रभाव नहीं के बराबर हो गया. इस सभी परिवर्तनों के कारण दुनिया के अधिकांश शहरों में शोर का स्तर बहुत कम हो गया. शोर कम होने से हम दिन में भी अपनी घड़ियों की टिक-टिक की आवाज सुन सकते हैं. पहले तो सिर्फ रात में ही सुन सकते थे.



नदियों का भी यही हाल है. इस कोरोना काल में उद्योग धंधे बंद हो गये . लोगों का बाहर निकलना बंद हो गया. भारत जैसे विशाल देश में हम हर माह कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है. जिसके कारण लोग नदियों में स्नान करने भी जाते थे. और अपनी गंदगी छोड़ कर आते थे. कारखानों की गंदगी भी नदियों में आती थी , लेकिन कारखाने बंद रहने से केमिकल पदार्थों की गंदगी नदियों में आनी बंद हो गई, जिसके कारण नदियाँ सुंदर और स्वच्छ लगने लगी. नदियों का पानी साफ हो गया. हाल ही में, एक रिपोर्ट के अनुसार हमारी गंगा नदी भी शुद्ध हो गई.

नायट्रोजन डाय ऑक्साइड और कार्बन डाय ऑक्साइड में कमी का मुख्य कारण है कि कोरोना काल में लॉकडाउन यानि उद्योग धंदा, रेल, बसेस, दुकाने सभी बंद. जिससे प्रदुषण में कमी आयी. और पर्यावरण दुष्प्रभाव से बच गया.



ओज़ोन परते जो बुरी तरह प्रभावित हुई थी वह अभी कोरोना के कारण बिलकुल स्वच्छ हो गई है. यह परत वायुमंडल में 5-8 किलो मीटर की दूरी तक होती है. जो आकाशीन नक्षत्र से आने वाले खराब किरणों एवं अन्य बुरे प्रभाव को कम कर पृथ्वी पर आती है. लेकिन पर्यावरण दूषित के कारण इसमें भी छिद्र हो गया.

**पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव :** कोरोना काल में अप्रत्यक्ष नकारात्मक प्रभाव पड़े है. जैसे कि घरेलू और चिकित्सा क्षेत्रों में कचरों की वृद्धि तथा चिकित्सा क्षेत्रों में जैसे मास्क . दस्ताने, प्रयुक्त या एकपायर्ड दवायें और अन्य सामान आसानी से घरेलू कचरे के साथ मिलाये जा सकते हैं. लेकिन अब उन्हें खतरनाक अवशिष्ट के रूप में लाया जाता है और उससे अलग से निपटाना पडता है. इसके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ ने सभी देशों से अनुरोध किया है कि कोरोना काल में विशेष रूप से अस्पतालों से निकले कचरों का अलग रूप में रखा जाए और उनका सही तरीके से नष्ट किया जाए जिससे पर्यावरण पर कोई बुरा प्रभाव न पड़े. अंततः यह कहा जा सकता है कि कोरोना का प्रभाव पर्यावरण पर सकारात्मक रहा.

**पर्यटन :** अब हम बात करते हैं पर्यटन की, पर्यटन अर्थव्यवस्था बुरी तरह प्रभावित हुई है और भविष्य में और भी प्रभावित होगी. इस कोरोना काल से अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन अर्थव्यवस्था में 60-80% भी गिरावट आयी है जो भविष्य में दिसम्बर 2020 में बढ़कर 80% हो गई है. युरोपीय देशों में जहाँ 75% अर्थव्यवस्था पर्यटन पर टिकी है वो लगभग अधिक तेजी से ठीक होने की उम्मीद है. अब तो कई देशों की सरकार इस पर काम करना शुरू कर दी है जिससे उसमें देश या पर्यटन क्षेत्र फिर से चालू हो सके. इन सभी बातों से पता चलता है कि कोरोना का नकारात्मक प्रभाव पर्यटन क्षेत्र पर बुरी तरह प्रभावित हो रहा है और संभावतः भविष्य में रहेगा भी. निम्नलिखित पर्यटन उद्योग जो बुरी तरह कोरोना प्रभावित हुए :

- (1) **परिवहन और टूर ऑपरेटर :** इस क्षेत्र में कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों और आश्रित गतिविधियों पर अल्प प्रभाव पडा है और भविष्य में भी रहेगा.
- (2) **क्रूज :** इस क्षेत्र में कार्य करने वाले पर बहुत बुरा प्रभाव पडा . सारे क्रूज जहाज कड़े हो गये. क्रूज कर्मियों की नौकरी तक चली गई..
- (3) **रेल :** इस पर कोरोना का बुरा प्रभाव रहा जिससे सरकार की राजस्व पर बुरा प्रभाव पडा.
- (4) **होटल :** यह भी उद्योग बुरी तरह प्रभावी रहा और लोग बेरोजगार हो गये.
- (5) **रेस्टॉरंट :** इस क्षेत्र में पुरे विश्व में लगभग 10 करोड़ लोगों का रोजगार चला गया.



(6) **व्यापार** : कोरोना के कारण व्यावसायिक यात्रा रद्द या निलंबित करना पड़ी. विश्व की सभी खेलों को स्थगित करना पड़ा जिससे विश्व व्यापार ठप्प हो गया. विश्व की सारी सांस्कृतिक खेल और मनोरंजन भी रद्द कर दी गई.

(7) **टूर गाइड** : कोरोना काल में इनका भी रोजगार चला गया जिससे इनका परिवार काफी प्रभावित हुआ.

पर्यटन क्षेत्र में भविष्य को लेकर WTTC ने कोविड-19 टास्क फोर्स का गठन किया है जो विश्वभर की पर्यटन श्रेणी का अध्ययन कर विश्व के सभी देशों में सरकार एक उचित मानदंड निर्धारित करने की सलाह दी है. जिसके अंतर्गत प्रत्येक देश अपने-अपने देश में इस क्षेत्र का बढ़ावा देने के लिए स्पेशल पैकेज देने जा रही है जिसके चलते इस क्षेत्र में लगे सारे छोटे-छोटे उद्योगों को पुरा सहयोग दिया जाए और यह क्षेत्र पुनः आर्थिक रूप से सुदृढ बने. इस उद्योगों को नए प्रोटोकाल के तहत सक्रिय किया गया है:-

- (1) श्रमिकों की रक्षा करना
- (2) यात्रियों में विश्वास को बढ़ाना
- (3) सामाजिक दूरी सुनिश्चित करना
- (4) आवश्यक सफाई और स्वच्छता
- (5) मास्क और सेनेटाइजर की व्यवस्था

उपयुक्त बातों को ध्यान देने से पता चलता है कि भविष्य में पर्यटन का विकास संबन्ध है यदि हमारी सरकार पूर्ण रूप से इस पर ध्यान दे और इस क्षेत्र का कुछ आर्थिक पैकेज की सहायता करें. पर्यावरण तो हमारा बहुत ही स्वच्छ और सुंदर बन जाता. हर तरफ हरियाली-हरियाली ही दिखाई देती है. बस हम मानव समाज को दोनो गतिविधियों पर नजर रखना पड़ेगा.





दिनांक 30.06.2021 पर आधारित

मुंबई उपनगरीय क्षेत्रीय कार्यालय : एक नजर

कुल शाखाएँ : 39

महानगरीय	अर्द्ध - शहरी	ग्रामीण
34	01	04

व्यवसाय एक नजर में

चालू जमा	बचत जमा	कासा जमा
387.16	3245.34	3632.50

कुल अग्रिम

रिटेल	एमएसएमई	कृषि	एनपीए
1017.10	377.80	13.57	158.34





## वित्तीय वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	“क” क्षेत्र	“ख” क्षेत्र	“ग” क्षेत्र
1.	हिन्दी में मूल पत्राचार (ई- मेल सहित)	“क” क्षेत्र को 100%	“क” क्षेत्र को 90%	“क” क्षेत्र को 55%
		“ख” क्षेत्र को 100%	“ख” क्षेत्र को 90%	“ग” क्षेत्र को 55%
		“ग” क्षेत्र को 65%	“ग” क्षेत्र को 55%	“ग” क्षेत्र को 55%
2.	हिन्दी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिन्दी में देना	100%	100%	100%
3.	हिन्दी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिन्दी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिन्दी में टंकक एवं आशुलिपि की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिन्दी में डिक्टेशन	65%	55%	30%
7.	हिन्दी प्रशिक्षण	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	पुस्तकों की खरीद	50%	50%	50%
10.	कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्विभाषी खरीद	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%
13.	(i) मंत्रालयों /विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों / उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठके वर्ष में	04	04	04
15.	कोई, मैनुअल, फार्म का हिन्दी अनुवाद	100%	100%	100%





स्वच्छ परिसर - संतुष्ट ग्राहक  
CLEANER THE PREMISES,  
HAPPIER THE CUSTOMERS!

“मेरी शाखा - मेरी शान”  
“My Branch – My Pride”



[www.centralbankofindia.co.in](http://www.centralbankofindia.co.in) Toll Free Number: 1800-22-1911

Like us on <https://www.facebook.com/CentralBankofIndia> Follow us on [https://twitter.com/centralbank\\_in](https://twitter.com/centralbank_in)